Daily Gospel Reflections in Hindi

17 October 2019

मत्ति 25 : 1 - 13

The parable of the ten bridesmaids

आज का सुसमाचार भाग हमारे लियें सुपरिचित है। दस कुँवारियों का दृष्टांत के जरिये, हमेशा, प्रभु के आगमन के लिये तैयार होकर बैठने को आदेश देते है।

समझदार और नासमझ लोगो के बारे मे कहते हुए, प्रभु ईसा मसीह हम लोगो को, प्रभु को किस तरह से, स्वागत करना है, इसके बारे मे बताते हैं।

समझदार कुवारियाँ मशाल लेकर आई थी, वह नही जानती थी कि दुल्हे का आगमन कब होगा, इसलिये वे कुप्पीयों में अधिक मात्रा में, तेल साथ मे लेकर आई थी। इसी के वजह से, उन्हे दुल्हे का स्वागत करने का मौका भी मिला।

नासमझ कँवारियाँ भी मशाल लेकर आई थी, लेकिन नासमझ कुँवारियाँ मशाल में डालने को, अतिरिक्त तेल साथ मे लेकर नही आई थी। जब दुल्हे का आगमन का वक्त आ गया, तब उन्हें तेल का इंतजाम करने को दौड़ना पड़ा इसी कारण, वे दुल्हे को स्वागत नही कर पाई।

सुसमाचारो के शुरूआत से , या प्रभु के सामूहिक जीवन के शुरूआत से यह अवगत कराते है कि, पश्चाताप करो स्वर्गराज्य निकट आ गया है। इस संदेश को कई बार हमारे सामने लाते है। ताकि हम लोगो मे से कोई–भी दुल्हे, यानी ईसा मसीह का आगमन सें छूट न जायें। जो भी घटनायें हमारे व्यक्तिगत जीवन मे होते है, वह सब प्रभु के स्वागत के लिए तैयार करने के लिये, एक चेंतावनी है।

यहाँ पर सवाल यह है कि, क्या हम लोग उस समझदार या नासमझ कुँवारियाँ के समान है? जवाब तो हमें खुद ढूँढकर निकालना है। क्या हम लोग प्रभु के स्वागत के लिए पूर्ण रूप से, तैयारी के साथ जीवन बिताते है या नही ? कभी–कभी हम उन नासमझ कुँवारियों के समान, बिना कोई तैयारी के साथ रहते है। हमारे व्यक्तिगत जीवन मे, अतिरिक्त श्लाई के कार्य करते हुए, उन समझदार कुँवारियों जैसे जीवन बिताने की कौशिश करेंगे, ताकि हम स्वर्गराज्य मे प्रभु के साथ प्रस्थान कर सकें।

Rev. Fr. Alex Pulickaparambil

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019